मिथिलांचल के हिंदी उपन्यासकारों में पर्यावरणीय चेतना

विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय,

कामेश्वरनगर, दरभंगा

की पी-एच.डी. उपाधि के लिए प्रस्तावित

शोध-प्रारूप

संकाय-मानविकी

विषय-हिन्दी

शोध निर्देशक

डॉ० संतोष कुमार

अध्यक्ष हिन्दी-विभाग

भारती मंडन महाविद्यालय,

रहिका, मधुबनी

शोधार्थी

संजय कुमार राय

ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वरनगर, दरभंगा

क्रमांक संख्या : E2209033

मिथिलांचल के हिंदी उपन्यासकारों में पर्यावरणीय चेतना

प्रस्तावना :–

भारत में पर्यावारण संरक्षण एवं प्रकृति-प्रेम की जड़ें बहुत गहरी हैं, जिन्हें हम बराबर सींचते आए हैं। हमने धरती को माता कहकर संबोधित किया और जीवनदायिनी नदियों को माँ के ही समतुल्य माना। इसके पीछे धारणा यही थी कि हम इनका संरक्षण करें, ताकि ये मानव जीवन को सुखमय बनाएँ। हमने बहुत पहले इस मर्म को समझ लिया था कि मानव जीवन को बनाये रखने के लिए प्रकृति एवं पर्यावरण को संरक्षित और समृद्ध बनाएं रखना नितांत आवश्यक है।

सन् 1954 ई. में प्रकाशित बाबा नागार्जुन का उपन्यास ‘बाबा बटेसरनाथ’ अपने समय के श्रेष्ठ उपन्यासों में से एक है। ध्यान देने की बात यह है कि ‘चिपको आंदोलन’ से बीस वर्ष पूर्व यह उपन्यास एक पेड़ के अस्तित्त्व का आख्यान रचता है। इस दृष्टि से बाबा नागार्जुन की चेतनशीलता की कल्पना की जा सकती है कि साठ के दशक में वे एक पेड़ को नायक बनाकर उपन्यास लिखते हैं। दरअसल हिंदी साहित्य में जल, जंगल और जमीन की समस्या और समाधान पहले पहल ‘आदिवासी साहित्य’ के उदय के साथ ही अस्सी-नब्बे के दशक के बाद मिलता है।लेकिन इस प्रवृत्ति का पूर्वाभास हमें नागार्जुन कृत सन् 1954 ई. के उपन्यास ‘बाबा बटेसरनाथ’ में भी देखने को मिलता है। किसी भी समाज के लिए पेड़-पौधे किस हद तक महत्त्वपूर्ण हो सकते हैं; ‘बाबा बटेसरनाथ’ पूरी शिद्दत के साथ इसे स्थापित करने में सफल रहा है। नि:संदेह उनकी पर्यावरणीय चेतना अत्यंत विकसित थी। पेड़ ही नहीं ताल, तलैया, तालाब की चिंता भी नागार्जुन को सरोकार संपन्न उपन्यासकार बनाता है। दम तोड़ते पेड़ की कथा जहाँ उन्होंने ‘बाबा बटेसरनाथ’ में लिखी, वहीं अंतिम साँस गिनते तालाब की 1957 ई. में ‘वरुण के बेटें में’।

अनुपम मिश्र की अद्भुत पुस्तक 'आज भी खरे है तलाब' को 'वरुण के बेटे' उपन्यास के साथ पढने पर हमारे लोक में जो जल चेतना और तालाब संरक्षण की भावना है उसका साक्षात्कार होता है। मिश्र जी लिखते हैं– 'सैकड़ों हजारो तालाब अचानक शून्य से प्रकट नहीं हुए थे, इसके पीछे एक इकाई थी बनवाने वालो की तो दहाई थी बनाने वालों की यह इकाई दहाई मिलाकर सैकड़ा बनाती थी। पिछले दो सौ वर्षों में एक नए किस्म की थोड़ी सी पढ़ाई पढ़ गए समाज ने इस इकाई-दहाई सैकड़ो को शून्य ही बना दिया वरुण के बेटे उपन्यास के माध्यम से नागार्जुन इसी शून्यता से लड़ते है।' वह संदेश देते हैं कि तालाब शून्यता अंतत: हमें सभ्यता शुन्यता की तरफ ले जाएगी। एक तालाब के अस्तित्व की लड़ाई के बहाने वे पूरे देश में तालाबों पर मंडराते संकट के प्रति हमें आगाह करते हैं, यह यूँ ही नहीं है कि देश का बड़ा हिस्सा जल संकट से जूझ रहा है ।

प्रस्तावित शोध-विषय की आवश्यकता :–

प्रस्तुत शोध-विषय चूँकि पर्यावरण से सम्बन्धित है इसलिए इसकी आवश्यकता विशिष्ट हो जाती है। साहित्य और पर्यावरण के अन्त:सम्बन्ध को विवेचित-विश्लेषित करने के क्रम में युगानुरूप अपेक्षा ये है कि हम साहित्य को पर्यावरणीय दृष्टि से देखें। यह सर्वविदित है कि प्रकृति का संग-साथ तो जीवन और साहित्य के साथ था ही, अब जरूरत इस बात की है कि हम साहित्य को पर्यावरण के साथ जोड़कर देखें। इस प्रकार के विभिन्न प्रयास अलग-अलग स्तर पर हो रहे हैं, लेकिन सतत रूप से ऐसे काम होते रहने की आवश्यकता है। मिथिलांचल का पर्यावरण-परिवेश अपने में विशिष्ट है, इसलिए भी इस शोधकार्य की आवश्यकता अपेक्षित है।

प्रस्तावित शोध-विषय का महत्व :-

हिंदी उपन्यासों की मुख्य प्रवृत्ति मानव केन्द्रित रही है। इस प्रवृत्ति को केन्द्रित कर कमोबेश सभी उपन्यासकार मानव-जीवन के विभिन्न गतिविधयों का चक्कर लगाते रहें हैं। उनके उपन्यास में जहाँ-कहीं भी पर्यावरण का जिक्र हुआ है, वह मानवीय जीवन को और अधिक उत्तम बनाने के

लिए ही हुआ है। हिंदी उपन्यास के आरंभ से बाबा नागार्जुन फणीश्वरनाथ रेणु तथा अन्य उपन्यासकारों ने पर्यावरण संबंधी जितने भी तथ्य वर्णित किये हैं, उसका संक्षिप्त विवरण देते हुए मिथिलांचल के हिन्दी उपन्यासकारों के उपन्यासों में पर्यावरण को विस्तृत रूप में देखना ही इस शोध प्रबंध का मुख्य ध्येय है।

पर्यावरण मुख्य रूप से वैश्विक विषय है; पर हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि विषय या उसका विषय-क्षेत्र चाहे कुछ भी हो, उसका संबंध मानव जीवन को संवारने के रूप में ही किया जाता है। हिंदी उपन्यासों में मानव जीवन को संवारने में जहाँ कहीं भी प्रकृति का योगदान रहा है, उपन्यासकारों ने उसे सहृदयता से स्थान दिया है। पर्यावरण को अपने उपन्यासों में स्थान देने वाले उपन्यासकरों में नागार्जुन तथा रेणु अग्रिम पंक्ति में हैं। यहीं कारण है कि इनके उपन्यासों को प्रस्तुत शोध-विषय का आधार ग्रंथ स्वीकार किया गया है। इन आधार ग्रंथों में वर्णित पर्यावरण को आलोचनात्मक पद्धति से विश्लेषित करना ही प्रस्तुत शोध-प्रबंध का मुख्य उद्देश्य है।

पूर्वकृत शोध :-

बाबा नागार्जुन एवं रेणु को केंद्रित कर हिंदी में अनेक शोध-कार्य हुए हैं। ये शोध-कार्य प्रस्तुत शोध-विषय **'मिथिलांचल के हिन्दी उपन्यासकारों में पर्यावरणीय चेतना'** से साम्य नहीं रखती हैं। अत: मेरी जानकारी में प्रस्तुत शोध-विषय नवीन है। इस शोध-प्रबंध को सफल बनाने में सहायतार्थ पूर्ववर्ती शोध कार्यों को ध्यान में रखते हुए विभिन्न आलोचनात्मक ग्रंथों से सहायता ली जाएगी। नागार्जुन से संबंध रखने वाले कुछेक शोध-कार्यों का नामोल्लेख हैं –

1. नागार्जुन के काव्य में जनवादी प्रवृत्तियाँ : रमाकांत सिंह, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, 1989
2. नागार्जुन के काव्य का कलापक्षीय अनुशीलन; सरला मुदलियार, गुरु घासी दास विश्वविद्यालय,1989
3. प्रगतिशील चेतना और नागार्जुन का काव्य; अनिल कुमार, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, 1986

4. नागार्जुन की कविताओं में प्रकृति, प्रेम और लोक-जीवन की अभिव्यक्ति का अध्ययन, पटना विश्वविद्यालय पटना, बिहार
5. कवि नागार्जुन की सामाजिक चेतना; बॉबी यादव, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, 2007
6. नागार्जुन के काव्य में बिम्ब विधान; दिलीप सिंह, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक, 2006
7. नागार्जुन की काव्यभाषा; कमलेश कुमार वर्मा, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, 2011
8. नागार्जुन के काव्य में शिल्प प्रयोग; जोगेन्द्र सिंह मीना, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, 2014
9. नागार्जुन के काव्य में प्रस्तुत बिम्ब एवं प्रतीकों का समीक्षात्मक अध्ययन; उषा माहेश्वरी, कनोहर लाल महिला कॉलेज मेरठ, 2006

शोध के आधार-ग्रंथ :-

1. नागार्जुन रचनावली, संपादन- सयोंजन शोभाकांत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला सं. 2003
2. रेणु रचनावली, संपादक- भारत यायावर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सातवाँ सं. 2021
3. राजकमल चौधरी रचनावली, संपादक- देवशंकर नवीन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं 2015
4. माटी के लोग सोने की नैया, मायानंद मिश्र, अंतिका प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2023
5. बाबा बटेसरनाथ; नागार्जुन, राजकमल प्रकाशन, सं. 2016
6. बलचनमा; नागार्जुन, वाणी प्रकाशन, सं. 2002
7. वरुण के बेटे; नागार्जुन, राजकमल प्रकाशन, सं. 2008

प्रस्तावित शोध की परिकल्पना :-

प्रस्तुत शोध-प्रबंध का शीर्षक 'मिथिलांचल के हिन्दी उपन्यासकारों में पर्यावरणीय-चेतना' है। इस शोध-प्रबंध में नागार्जुन,रेणु तथा अन्य उपन्यासकारों के उपन्यासों को केन्द्रित कर प्रकृति-प्रेम और उसके अवधारणा, स्वरूप, विकास एवं उसकी प्रासंगिकता-अप्रासंगिकता को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समझने समझाने का प्रयत्न किया जाएगा।

मिथिलांचल के हिंदी उपन्यासकारों के उपन्यासों के वर्ण्य-विषय को केंद्र में रखकर उस काल-खंड की एवं उससे तुलना करते हुए वर्तमान समय की पर्यावरण संबंधी क्रिया-कलापों का अलोचनात्नक विश्लेषण इस शोध-प्रबंध का केंद्र बिंदु रहेगा।

विकास के दौड़ में पर्यावरण के साथ हमने जो अनुचित व्यवहार किया है; अपने आप को विकसित बनाने के लिए हमने पर्यावरण के साथ जो क्रूर व्यवहार किया है; उन सभी को बाबा नागार्जुन, 'रेणु' तथा अन्य उपन्यासकारों के पर्यावरणीय-चेतना के माध्यम से इस शोध-प्रबंध में समकालीन समय के अलोक में परखने की कोशिश की जाएगी।

निष्कर्षत: पर्यावरण के भिन्न-भिन्न स्वरुपों, मानव जीवन में उसकी उपयोगिताएँ आदि को समझते-समझाते हुए, नागार्जुन के उपन्यासों के माध्यम से अब तक पर्यावरण संबंधी नीति-अनीति व जागरूकता को स्पष्ट करने की कोशिश की जाएगी। पर्यावरणीय-चेतना को परंपरागत भाव-बोध के साथ ही साथ आधुनिक भाव-बोध से भी समझने की कोशिश की जाएगी।

प्रस्तावित शोध की प्रविधि :–

प्रस्तावित विषय को उसके निहित उद्देश्य तक पहुँचाने हेतु एक दिशा की आवश्यकता होती है। शोधकार्य में यह दिशा शोध प्रविधि के रूप में सहायक सिद्ध होती है। प्रस्तुत शोधकार्य को नए आयाम और दिशा देने के लिए जिन प्रविधियों का प्रयोग किया जायेगा वे इस प्रकार हैं –

(क) आलोचनात्मक शोध प्रविधि
(ख) ऐतिहासिक शोध प्रविधि
(ग) तुलनात्मक शोध प्रविधि
(घ) समाजशास्त्रीय शोध प्रविधि

आलोचनात्मक शोध प्रविधि :– शोध कार्य के लिए चुने गए विषय के अध्ययन के लिए आलोचनात्मक पद्धति का प्रयोग किया जायेगा। इस पद्धति के द्वारा उपन्यासों पर शोध वांछनीय समझा जाता है। इस दृष्टि से प्रस्तुत शोध विषय की वस्तुनिष्ठता को ध्यान में रखते हुए, निष्कर्षों को आलोचनात्मक प्रविधि के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास रहेगा।

ऐतिहासिक शोध प्रविधि :– इसके अंतर्गत ऐतिहासिक दस्तावेजों के आधार पर शोध संबंधी जिज्ञासाओं को समझने समझाने का प्रयास किया जाएगा।

समाजशास्त्रीय शोध प्रविधि :– समाजशास्त्रीय शोध प्रविधि के रूप में नागार्जुन के उपन्यासों में अभिव्यक्त समाज, संस्कृति और दार्शनिक सिद्धांत आदि का अध्ययन किया जायेगा। उनके उपन्यासों में पर्यावरण संबंधित सामाजिक-सांस्कृतिक मान्यताओं को दिखाने के लिए समाजशास्त्रीय पद्धति का प्रयोग किया जायेगा।

तुलनात्मक शोध प्रविधि :– इसके अंतर्गत नागार्जुन के उपन्यासो में उकेरे गए चित्रों और चरित्रों के मूल्यांकन के लिए इनकी तुलना हिंदी के अन्य प्रमुख उपन्यासों में पर्यावरण संबंधित चित्रित प्रसंगों से किया जाएगा।

सर्वेक्षण :– मिथिलांचल के कई क्षेत्रों का प्रत्यक्षत: अवलोकन प्रस्तुत विषय के लिए किया जाएगा।

शोध अध्यायों का विभाजन :-

भूमिका

अध्याय-एक : **पर्यावरणीय चेतना की अवधारणा और हिन्दी-उपन्यास**

अध्याय-दो : **पर्यावरणीय चेतना और मिथिलांचल के हिन्दी उपन्यासकार**

अध्याय-तीन : **नागार्जुन के उपन्यासों में पर्यावरण :** बलचनमा, वरुण के बेटे, बाबा टेसर नाथ, कुम्भी पाक, दुखमोचन, नई पौध, उग्रतारा, पारो

अध्याय-चार : **'रेणु' के उपन्यासों में पर्यावरण :** मैला आँचल, परती परिकथा, जुलूस, पल्टू बाबू रोड, कितने चौराहे

अध्याय–पाँच : **अन्य हिन्दी-उपन्यासकारों में पर्यावरण :** मायानन्द मिश्र, राजकमल चौधरी, उषा किरण खान, आरसी प्रसाद सिंह

अध्याय– छह : **उपलब्धियाँ और सीमाएँ**

उपसंहार

परिशिष्ट

सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची :-

1. कमलानंद झा : नागार्जुन दबी दूब का रूपक, अंतिका प्रकाशन, नई दिल्ली सं 2022
2. प्रो. गोपाल राय, हिन्दी उपन्यास का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2022
3. सोपान जोशी, जल –थल –मल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2020
4. अनुपम मिश्र, आज भी खरे है तालाब, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं 2009
5. बैद्यनाथ मिश्र 'यात्री', यात्री-समग्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2003
6. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं. 2007
7. डॉ. रामचन्द्र तिवारी, हिन्दी का गद्य साहित्य, विवि. प्रकाशन, वाराणसी, सं. 2018
8. रामधारी सिंह 'दिनकर', संस्कृति के चार अध्याय, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, सं. 2023
9. श्री हरिदेव झा, वेदभूमि-मिथिला-संस्कृति दर्शन, श्री महेश झा, अंधराठाढ़ी, मधुबनी, सं 2014
10. मधुरेश, फणीश्वर नाथ रेणु और मार्क्सवादी आलोचना, यश एजुकेशन, नई दिल्ली, सं. 2012
11. डॉ. रामविलास शर्मा, प्रेमचन्द और उनका युग, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2011
12. विजय बहादुर सिंह, नागार्जुन संवाद, राधाकृष्ण प्रकाशन, विदिशा, मध्यप्रदेश, प्रथम सं. 1994
13. विजय बहादुर सिंह, नागार्जुन का रचना-संसार, संभावना प्रकाशन, हापुड़, प्रथम सं० 1982
14. महावीर अग्रवाल, नागार्जुन : विचार सेतु, प्रकाशन दुर्ग, नई दिल्ली, प्रथम सं.
15. मैनेजर पाण्डेय, शब्द और कर्म, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम सं., 1997
16. रामविलास शर्मा, भाषा, युगबोध और कविता, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम सं. 1981

17. शोभाकांत, नागार्जुन मेरे बाबूजी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम सं. 1990

पत्र-पत्रिकाएँ :-

1. कांति प्रसाद जैन, ज्ञानोदय, अंक– फरवरी- 1961, जनवरी– 1965, नवंबर 1965, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी

2. जगदीश गुप्त (सं), नई कविता, अंक – 1, 1954

3. धीरेन्द्र वर्मा (सं), हिंदी साहित्य कोश, प्रथम खंड, वि. सं., 2015 ज्ञानमंडल वाराणसी

4. नन्ददुलारे वाजपेयी (सं), आलोचना, अक्टूबर-अप्रैल– 1957

5. प्रताप सिंह विष्ट (सं), आजकल, वर्ष– 53, अंक– 2, जून 1996

शोध निर्देशक
डॉ० संतोष कुमार
अध्यक्ष हिन्दी-विभाग
भारती मंडन महाविद्यालय,
रहिका, मधुबनी

शोधार्थी
संजय कुमार राय
ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा
क्रमांक संख्या : E2209033

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

मिथिलांचल के हिंदी उपन्यासकारों में पर्यावरणीय चेतना

शोध-विषय पर संक्षिप्त विवरण

मनुष्य का प्रकृति और पर्यावरण से गहरा संबंध रहा है। प्रकृति के बिना मनुष्य जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। मिथिलांचल की भूमि प्रकृति के अनमोल रत्न से याच्छादित रही है। आज के मिथिलांचल और पूर्व के मिथिलांचल के पर्यावरण में बहुत अंतर है। प्रकृति संपदा का यहाँ निरंतर ह्रास ही रहा है। मिथिलांचल के साहित्यकारों ने यहाँ के लोगों के प्रकृति प्रेम को करीब से देखा है, साथ ही पर्यावरण के ह्रास को भी। इसलिए यहाँ के साहित्यकारों ने प्रकृति और पर्यावरण से जुड़ी मनुष्य की संवेदना को आधार बनाकर साहित्य की रचना की है। मिथिलांचल के लोकगीत पर रहन-सहन में पर्यावरण का सरोकार रहता है।

शोध निर्देशक
डॉ० संतोष कुमार
अध्यक्ष हिन्दी-विभाग
भारती मंडन महाविद्यालय,
रहिका, मधुबनी

शोधार्थी
संजय कुमार राय
ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा
क्रमांक संख्या : E2209033

डॉ० संतोष कुमार
सहायक प्राचार्य, सह अध्यक्षक
हिन्दी-विभाग,
भारती मंडन महाविद्यालय,
रहिका, मधुबनी, बिहार– 847238

आवास
"वैद्यनाथ धाम", सिमरा,
दरभंगा, बिहार– 846005
संपर्क–9905639492/9472198045
santoshkumar0321@gmail.com

पत्रांक : ……………………… दिनांक : …………………

सहमति–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **संजय कुमार राय**, स्नातकोत्तर हिंदी-विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा को प्रस्तावित शोध-प्रारूप **'मिथिलांचल के हिंदी उपन्यासकारों में पर्यावरणीय चेतना'** विषय पर शोध-निर्देशन देना मुझे स्वीकार है। मेरी जानकारी में इस विषय पर शोध-कार्य संपन्न नहीं हुआ है।

मैं इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

(डॉ० संतोष कुमार)
शोध निर्देशक